ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०९
दिनांक- मंगलवार, ०१ फरवरी, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 19.0 एवं 7.9 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 72 प्रतिशत, हवा की औसत गति 0.4 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 1.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 8.0 एवं दोपहर में 22.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(02–06 फरवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 02–06 फरवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- सक्रिय पश्चिमी विछोभ के प्रभाव से अगले २–३ दिनों (४८–७२ घंटों में) मौसम में भारी बदलाव आने की सम्भावना है। जिसके कारण ३–४ फरवरी में आसमान में गरज वाले बादल बनने की सम्भावना है तथा उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की–हल्की वर्षा हो सकती है बेगुसराई, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा तथा मधुबनी के जिलों के अनेक स्थानों पर मध्यम वर्षा भी हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 7 से 10 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले एक–दो दिनों तक पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- ०४-०५ फरवरी को वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई कृषि कार्यो में सर्तकता बरतें। खड़ी फसलो में सिंचाई स्थगित रखे। फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- इस समय आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना अधिक रहती है। अतः किसान भाई अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में जहाँ दीमक की समस्या हो, क्लोरपाईरिफॉस २० ई०सी० / २.५ मी०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने एवं उसके आस-पास की मिट्टी में छिड़काव करने से दीमक की उग्रता में कमी आती है। मधुआ एवं दहिया कीटों का प्रकोप कम करने के लिए वृक्षों में इमिडाक्लोप्रीड १७.८ एस०एल० अथवा साइपरमेथ्रीन १० ई०सी०/१.० मी०ली०/ली० पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें। घुलनशील गंधक (सल्फर) ८० डब्लू०पी०/ २ ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल कर पत्तियों पर समान रुप छिड़काव करने से आने वाले समय में पौउड्री मिल्डेव की उग्रता में कमी आती है।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के १५ दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। दीमक कीट का प्रकोप फसल में दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०-३० किलो बालू में मिलाकर खड़ी फसलों में समान रूप से व्यवहार मौसम साफ रहने पर ही करें।
- रबी मक्का की फसल जिसमें धनबाल एवं मोचा आ गई हो, ४० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन वर्षा उपरान्त करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियाँ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों जैसे-भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुआँ की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। सब्जियों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी-गली गोबर खाद का प्रबंध करें। १५०-२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०-३० किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन सब्जियों की छोटे-छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है।
- पिछले माह रोपी गई प्याज में खर-पतवार निकालें एवं कम दिनों के अन्तराल पर हल्की सिंचाई करते रहें। प्याज में कीट एवं रोग-व्याधि का निरीक्षण करें।

आज का अधिकतम तापमानः १६.९ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ७.० डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः ७.९ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.१ डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी